रात का गीत (1 अक्टूबर)

गलातियों 6:7 क्योंकि मनुष्य जो कुछ बोता है वही काटेगा।

हालाँकि प्रत्येक कार्य और शब्द और विचार का प्रभाव अंततः हर एक मसीही के जीवन में पड़ता है, फिर भी कोई एक विचार, कोई एक शब्द, और कोई एक क्रिया किसी पर भी अच्छाई या बुराई के लिये निर्णायक वजन नहीं डालता है। हम जितना वफ़ादार रहेंगे, जितना अधिक विश्वासी रहेंगे, उतनी ही कम गलतियाँ करेंगे, उतना ही अधिक हम अपने उद्धारकर्ता की तरह बनेंगे, और उतना ही चमकदार हमारा इनाम होगा, क्योंकि प्रेरित एलान करते हैं, "क्योंकि एक तारे से दूसरे तारे के तेज में अन्तर है, मुर्दों का जी उठना भी ऐसा ही है।" वे, फिर, जो दुनिया के हैं, वे जान सकते हैं कि मसीह के हजार वर्ष के राज्य की व्यवस्था के अंतर्गत उनका हर अच्छा या बुरा कार्य उनके जीवन या मृत्यु से सम्बंधित परीक्षा को प्रभावित करेगा। और हर एक मसीही जिन्होंने वाचा बाँधी है, की वे मसीह के साथ मर गए हैं ताकि वे उनके साथ जीयेंगे भी, मसीह के साथ दुःख उठाएंगे ताकि वे उनके साथ राज्य भी करेंगे -- हममें से हर एक को ये जानना चाहिए हमारा हर शब्द, हर एक सोच, हर एक क्रिया का प्रभाव बड़े इनाम से सम्बन्ध रखता है। इसलिए प्रेरित बोलते हैं, वैसे सब लोगों को ध्यान से अपने जीवन में चलना है, बुद्धिमानी से चलना है, उन वस्तुओं को जानने और करने की खोज में रहना है जो परमेश्वर को

भाती हैं, और उच्चतम इनाम को पाने की खोज में रहना है। **`Z'13-126` R5226:5 (Hymn Appendix O)** **आमीन**

रात का गीत (2 अक्टूबर)

इफिसियों 4:32 और एक दूसरे पर कृपाल, और करूणामय हो, और जैसे परमेश्वर ने मसीह में तुम्हारे अपराध क्षमा किए, वैसे ही तुम भी एक दूसरे के अपराध क्षमा करो।

यीशु के बलिदान के मूल्य के माध्यम से स्वीकार किए गए परमेश्वर के पुत्रों, नई सृष्टियों में से प्रत्येक को अपनी कमजोरियों के लिए जिम्मेदार माना जाता है; लेकिन दिव्य शक्ति ने मसीह के निमित्त, उनके पापों को मुफ्त में रद्द करने का प्रबंध प्रदान किया है, यदि वे अपने पापों को मान लें और उनके लिये क्षमा माँगे। लेकिन परमेश्वर के बच्चों के इन अपराधों के लिये परमेश्वर से क्षमा मिलना इस बात पर निर्भर करता है कि इनके पास अपने भाइयों के लिये कितनी क्षमा की आत्मा है, क्योंकि "यदि तुम मनुष्यों के अपराध क्षमा न करोगे, तो तुम्हारा स्वर्गीय पिता भी तुम्हारे अपराध क्षमा न करेगा।" "जिस प्रकार तुम दोष लगाते हो, उसी प्रकार तुम पर भी दोष लगाया जाएगा; और दया के जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिये भी नापा जाएगा। दिव्य व्यवस्थाएँ कितनी अद्भुत

हैं! कितनी धन्य हैं, हमारे लिए कितनी लाभदायक है, राज्य के लिए हमारी तैयारी में कितनी उपयोगी हैं! `Z'12-359` R5135:4 (Hymn 198) आमीन

रात का गीत (3 अक्टूबर)

यूहन्ना 15:10 यदि तुम मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो मेरे प्रेम में बने रहोगे: जैसा कि मैं ने अपने पिता की आज्ञाओं को माना है, और उसके प्रेम में बना रहता हूं।

आइए, प्रिय प्रियों, प्रभु के वचन के सम्बन्ध में पहले से अधिक सावधान रहें; आइए हम लापरवाही से प्यार के क्षय का सबूत न दें। हमारे प्रभु बताते हैं कि पिता के प्रेम में उनका एक अच्छे प्रिय पुत्र के रूप में बने रहने का मतलब यह है कि, ऐसा उनके द्वारा पिता की इच्छा के प्रति आज्ञाकारी रहने के कारण हुआ; और उसी का अनुसरन करते हुए, प्रभु अवश्य यह चाहेंगे की यदि हम प्रभु के प्रेम में बने रहना चाहते हैं और उनके सिंहासन और महिमा के भागी होना चाहते हैं, तो हमें भी प्रभु के प्रति आज्ञाकारी रहना चाहिए। हमारे प्रभु की शिक्षाओं और आज्ञाओं का उद्देश्य हमें डराना नहीं है, न ही हमें खुशियों से वंचित करना है। इसके विपरीत, "मैं ने ये बातें तुम से इसलिये कही हैं, कि मेरा आनन्द तुम में

बना रहे, और तुम्हारा आनन्द पूरा हो जाए।" (यूहन्ना 15:11) जो लोग प्रभु के करीब जीने का प्रमाण देते हैं, वे अच्छी तरह से जानते हैं कि प्रभु के वचनों का आज्ञापालन करना, साथ ही साथ प्रभु में बने रहने और उनके प्रेम को प्राप्त करने का विशेषाधिकार ही सबसे बड़ा आनंद है, एक ऐसा आनंद जो पूरी तरह से उन सभी क्षणभर के सुखों को मात दे देता है जिसे दुनिया प्रस्तुत करती है। यह वह आनंद और शांति है जो "सारी समझ से परे है", जो हमारे हृदयों पर राज्य करती है, और जो अपने साथ यह वादा, यह आश्वासन लाती है, कि "न केवल इस जीवन के लिये, जो अब है, बल्कि आने वाले जीवन की भी प्रतिज्ञा इसी के लिये है।" `Z'12-259` R5082:6 (Hymn 172) आमीन

रात का गीत (4 अक्टूबर)

यूहन्ना 9:4 जिसने मुझे भेजा है; हमें उसके काम दिन ही दिन में करना अवश्य है: वह रात आनेवाली है जिस में कोई काम नहीं कर सकता।

अपने आप से पूछें, मैं क्या कर रहा हूँ? फिर हर एक रोकनेवाली वस्तु और उलझाने वाले पाप को दूर करके, अपने प्रयासों को कई गुणा बढ़ायें। यदि अभी के समय में खुले बहुत से अवसरों के होते हुए भी आप सत्य के सेवक नहीं हैं, तो निश्चिंत रहें की आप इस सत्य के लिये अयोग्य हैं,

और इसपर अपनी पकड़ को खो देंगे, क्योंकि कटनी का समय अभी है जिसमे फटकने और अलग करने का कार्य चल रहा है। विभिन्न चीजें आपको सच्चाई से दूर करने की कोशिश करेंगी; पिता, माता, पुत्र और पुत्रियाँ, भाई-बहन विरोध करेंगे और आपको सच्चाई और उसकी सेवा से अलग करने की कोशिश करेंगे। आपको प्रभु के इन वचनों को याद रखना चाहिए कि "कटनी" शांति का समय नहीं है, लेकिन इसके विपरीत यह निश्चित रूप से सच्चे गेहूं और बाकी सभी लोगों के बीच अलगाव और दूरी को पैदा करेगा। मत्ती 10:30-39 वचनों और लूका 18:28-30 वचनों को देखें और इस विषय पर प्रभु के वचनों को खजाने की तरह इक्कट्ठा करें। `Z'87-Sept., p.2` R969:5 (Hymn 309) आमीन

रात का गीत (5 अक्टूबर)

फिलिप्पियों 4:13 (मसीह) जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।

हम चाहे बहुत अधिक या बहुत कम स्वाभिमान के साथ पैदा हुए हों, जो लोग परमेश्वर के परिवार में आते हैं उन्हें मसीह की पाठशाला में, दिव्य स्तरों के साथ तालमेल रखते हुए, पढ़ाया जाता है, सुधारा जाता है - सही बनाया जाता है। स्वाभाविक रूप से आत्म-अभिमानी को नम्रता सीखनी

चाहिए - निर्देशों द्वारा अगर वे सीखेंगे - अन्यथा अनुभवों से। और उन्हें अपमानजनक अनुभवों में भी आनन्दित होना सीखना चाहिए। इस प्रकार के अनुभव इस बात के सबूत हैं कि परमेश्वर के प्रावधान इन लोगों के मामलों की निगरानी करते हैं और उन्हें राज्य के लिए तैयार कर कर रहे हैं; क्योंकि बिना दीनता और नम्रता के कोई भी राज्य के लिए योग्य नहीं होगा। जैसे कि आत्म-अभिमानी को विनम्रतापूर्वक परमेश्वर पर भरोसा करना सीखना चाहिए और खुद पर भरोसा नहीं करना चाहिए और इस तरह से सुरक्षित संतुलन बनाना चाहिए, उसी प्रकार स्वाभाविक रूप से स्वयं को तुच्छ समझने वाले को भरोसा करने का पाठ सीखना चाहिए। आत्म-विश्वास नहीं, आत्म-निर्भरता सबसे अधिक वांछनीय नहीं है, बल्कि, परमेश्वर में विश्वास और उनके द्वारा वादा किये गए "आवश्यकता के हर समय हमारी सहायता करने के लिए मिलने वाले अनुग्रह" पर निर्भर करना चाहिए। यह वांछनीय दीनता और नम्रता को बनाए रखता है, फिर भी प्रेरितों के वचनों के द्वारा सुझाया गया साहस और बल देता है: "(मसीह) जो मुझे सामर्थ देता है उस में मैं सब कुछ कर सकता हूं।" जैसा कि पौलुस ने फिर से कहा है की, "हमारी योग्यता परमेश्वर की ओर से है"! `Z'12-319` R5113:3 (Hymn 93) आमीन

रात का गीत (6 अक्टूबर)

रोमियो 12:10 भाईचारे के प्रेम से एक दूसरे पर दया रखो; परस्पर आदर करने में एक दूसरे से बढ़ चलो।

सत्य कमजोर लोगों के बजाय मजबूत चरित्रों पर अपनी पकड़ बनाता हुआ प्रतीत होता है। जो लोग अधिक आसानी से मुड़ सकते हैं और अस्पष्ट विचारों वाले होते हैं, जिसके कारण प्रभु जिन्हें जयवंत की श्रेणी के सदस्यों के रूप में नहीं स्वीकार करेंगे, उनकी तुलना में मजबूत चरित्र के लोगों की देह में दृढ़ता, कड़ापन और लड़ाकूपन अधिक होता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि वही गुण जो हमें प्रभु के लिए स्वीकार्य बनाता है और जो जयवंत बनने की एक योग्यता है, कुछ मामलों में जब इन लोगों में से कई लोग एक साथ एक कलीसिया के रूप में इक्कट्ठा होते हैं, तब वही गुण इन्हें एक गंभीर नुकसान पहुँचा सकता है। यहां तक कि मिट्टी से घिरा एक हीरा भी कुछ नहीं काटेगा, कुछ भी नहीं खुरचेगा; लेकिन एक दर्जन हीरे एक साथ रखें, और जितना अधिक आप हीरे से मिट्टी के तत्व को हटायेंगे उतना ही अधिक हीरे के घिसने, साफ़ होने और कटने की संभावना है। ऐसा ही प्रभु के गहनों के साथ भी है - जितना अधिक वे लोग एक साथ मिलेंगे, उतना ही अधिक वे जागरूक होंगें, उतना ही अधिक उन्हें आपस में घर्षण के लिए अवसर मिलेंगे, और उतनी ही अधिक उन्हें पूरी तरह से पवित्र आत्मा में बने रहने और इससे ढके रहने की आवश्यकता

होगी, जो की, तेल की तरह, चिकनी और मलहम की तरह होगी और उनके आपस में टकराव या घर्षण को रोकने का प्रयत्न करेगी। `Z'12-99` R4995:5 (Hymn 23) आमीन

रात का गीत (7 अक्टूबर)

फिलिप्पियों 2:14,15 सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो। ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्कलंक सन्तान बने रहो, जिन के बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो।

हमारे प्रभु यीशु के पदचिन्हों पर चलते हुए, सुसमाचार के युग में हमारे सामने रखे महान पुरस्कार के लिये दौड़ में दौड़ते हुए, हमें इस मार्ग में कुड़कुड़ाना नहीं है, इस मार्ग की कठिनाइयों और संकीर्णता के साथ कोई गलती नहीं ढूंढनी है; न ही हमें इस सकेत मार्ग के सम्बन्ध में कोई विवाद रखना है, न ही इस खोज में रहना है कि काश दिव्य प्रावधान के अंतर्गत हमारे लिये कोई और मार्ग रखा गया होता। हमें यह महसूस करना है कि प्रभु वास्तव में जानते हैं की मसीह की पाठशाला में हमारे विकास के लिए क्या अनुभव आवश्यक हैं; और यह भी महसूस करना है कि, यदि हमारे मुँह को प्रभु और उनके द्वारा दिये गए अनुभवों के प्रति शिकायतों

और असंतोष से भरकर, आज्ञापालन करना संभव होता, तो वह यह दर्शाता की हम कम से कम प्रभु के द्वारा किये गए प्रबंध की आत्मा के साथ तालमेल में नहीं हैं; और इस प्रकार का आज्ञापालन यदि संभव होता (जो की संभव नहीं है), तो उसे दिव्य मंजूरी नहीं मिलती, और न ही हमें इनाम मिलता। `Z'11-441` R4929:5 (Hymn 197) आमीन

रात का गीत (8 अक्टूबर)

1 शमूएल 12:24 केवल इतना हो कि तुम लोग यहोवा का भय मानो, और सच्चाई से अपने सम्पूर्ण मान के साथ उसकी उपासना करो; क्योंकि यह तो सोचो कि उसने तुम्हारे लिये कैसे बड़े बड़े काम किए हैं।

हमारे मंदे पड़े उत्साह की मदद के रूप में, हमें लगातार अपने आप को प्रभु के महान आशीषों की याद दिलानी चाहिए। जैसे जैसे हम प्रभु की भलाई की सराहना करना सीखते हैं, यदि इसे हम सही तरीके से करें, तो इसका प्रभाव हमें मजबूत बनायेगा और हमें प्रभु के प्रति अधिक से अधिक वफादार बनायेगा। जब हम प्रभु के लोग बन गए और उनके साथ वाचा के रिश्ते में प्रवेश किया है, तब इस जीवन में उनके अनुग्रहों और आशीषों को प्राप्त करने के बाद भी, और आनेवाले जीवन के लिये वादों को पाने

के बाद भी, इस जीवन में पुरे मन के साथ उनकी सेवा नहीं करने का मतलब कुटिलता करना होगा, जिसे यदि हम लगातार करते रहे तो यह निश्चित रूप से विनाश लाएगा। परमेश्वर के प्रति विश्वसनीयता हमारी सभी इच्छाओं की कुंजी होनी चाहिए। `Z'03-218` R3224:4 (Hymn 243) आमीन

रात का गीत (9 अक्टूबर)

भजन संहिता 103:2,3 हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह, और उसके किसी उपकार को न भूलना। वही तो तेरे सब अधर्म को क्षमा करता, और तेरे सब रोगों को चंगा करता है।

दाऊद भविष्यद्वक्ता ने इन वचनों को एक यहूदी के रूप में खुद पर लागु किया होगा, और अपनी खुद की शारीरिक चँगाईयों और आशीषों को व्यवस्था की वाचा के अंतर्गत प्रभु के समर्थन का सबूत माना होगा। लेकिन आत्मिक इस्राएल के लिए इस भजन-संहिता के वचन का भविष्यद्वाणी के रूप में प्रयोग अधिक दिलचस्प है। आत्मिक इस्राएली नई सृष्टि हैं, और उनका यह धन मिटटी के पात्रों में है। इन आत्मिक इस्राएलियों के साथ ऐसा है कि यह इनका नया मन है, जो कि अपनी

चंगाई को, अपने क्षमा को, अपने परमेश्वर के साथ मेल - मिलाप को पहचानता है; और परमेश्वर के वादों के अनुसार सभी बातें मिलकर इनके लिये भलाई ही को उत्पन्न करती है क्योंकि वे परमेश्वर से प्रेम करते हैं और उनके दिव्य उद्देश्यों के अनुसार बुलाये गए हैं। नई सृष्टि के पास हमेशा ऊपर के इन वचनों का दावा करते रहने का कारण होता है। प्रेरित पौलुस ने, इसी प्रकार के समान विचारों को रखते हुए, यह कहा था कि महान उद्धारकर्ता अंततः अपनी कलीसिया को पिता के सामने बिना किसी दोष के और सिद्ध प्रेम में प्रस्तुत करेंगे - वह निर्बलता के साथ बोई जाती है; और सामर्थ के साथ जी उठती है; वह अनादर के साथ बोई जाती है, और तेज के साथ जी उठती है; स्वाभाविक देह बोई जाती है, और आत्मिक देह जी उठती है। हम उसके समान होंगे और उसको वैसा ही देखेंगे जैसा वह है और उसकी महिमा को बाँटेंगे। `Z'12-71` R4981:4 (Hymn 327) आमीन

रात का गीत (10 अक्टूबर)

फिलिप्पियों 3:14 निशाने की ओर दौड़ा चला जाता हूं, ताकि वह इनाम पाऊं, जिसके लिये परमेश्वर ने मुझे मसीह यीशु में ऊपर बुलाया है।

किसी भी मसीही को निशाने तक पहुंचने में एक लंबी देरी से संतुष्ट नहीं होना चाहिए। वचन के दूध को प्राप्त करना चाहिए, इससे मिले बल को अपनाना चाहिए, इसके बाद शीघ्र ही आत्मिक दृष्टि और आत्मिक ऊर्जा आनी चाहिए, और दिव्य सत्य के अन्न को शीघ्रता से मसीही चरित्र को पूर्ण परिपक्वता में लाना चाहिए। और एक बार इस स्तर को प्राप्त कर लेने के बाद, वहाँ सभी परीक्षाओं और परेशानियों से होकर जाते हुए भी, जिन्हें हमारे विरुद्ध आने की अनुमति शैतान, दुनिया और शरीर को हो सकता है दी जाये, हमें हर कीमत पर डटे रहना चाहिए। सबसे कड़ी लालसायें हमारे निशाने तक पहुँचने के बाद आती हैं - परमेश्वर की सेवा में धीमेपन के लिए लालसा; हमारे बलिदान के कुछ हिस्सों को अपने पास रख लेने की लालसा; भाईयों के साथ कठोरता से, दयाहीनता से, बिना प्रेम के बर्ताव करने की लालसा या हमारे पड़ोसी के साथ अन्यायपूर्ण व्यवहार करने की लालसा या हमारे शत्रुओं के साथ बिना उदारता के व्यवहार करने की लालसा। इन सभी लालसाओं का विरोध किया जाना चाहिए क्योंकि हम अपने अनंत जीवन के इनाम को देखते हैं, क्योंकि हम अपने राज्य में हमारे उद्धारक के साथ साँझा वारिस होने और उनके साथ संगती पाने के इनाम को देखते हैं। जो कोई भी इस विषय को देखता है उसे स्पष्ट रूप से महसूस करना चाहिए कि एकमसीही के रूप में उसे एक महान प्रस्ताव मिला है जो उसकी वफादारी, उसके साहस, उसके उत्साह, उसके प्यार की पूरी तरह से परीक्षा करेगा। उसे प्रभु के सकून देनेवाले आश्वासनों को याद रखने की आवश्यकता है कि, हर आवश्यकता के समय

जरुरी अनुग्रह उसे दिया जायेगा ताकि वह जयवंत बनकर बाहर निकल आये और निराश न हो, और न ही विरोधी शैतान के प्रहारों से उसका साहस नीचे गिरने पाये। `Z'09-270` R4470:5 (Hymn 4) **आमीन**

रात का गीत (11 अक्टूबर)

भजन संहिता 91:9,10 हे यहोवा, तू मेरा शरण स्थान ठहरा है। तू ने जो परमप्रधान को अपना धाम मान लिया है, इसलिये कोई विपत्ति तुझ पर न पड़ेगी, न कोई दु:ख तेरे डेरे के निकट आएगा।

परमेश्वर ने व्यवस्था कुछ ऐसी की है की, केवल जो वाकई में समर्पित लोग हैं उन्हीं को अभी के बुरे दिन में ठोकर खाने से बचाया जाएगा। प्रतिदिन हम ज्यादा से ज्यादा परमेश्वर के दिव्य समर्थन के प्रति आभार प्रकट करना सीखते हैं, जिस समर्थन ने हमारी समझ की आँखों का अभिषेक किया है, और हमको अनुमति दी है की हम परमेश्वर की दिव्य योजना और वचन की सुन्दरता को आत्मिक रूप से देख पाएं जो हमें सामर्थ देती है। यदि तब, परमेश्वर के दिव्य समर्थन के द्वारा, हम प्रभु में बलवन्त होते हैं और इस तरह से हम इस योग्य होते हैं, की दृढ़ता से हम खड़े रहें, जब की हज़ारों अपने विश्वास और दृढ़ता से गिर रहे हैं, आइए हम "आदर से आनन्दित हों" (परमेश्वर के प्रति आदर रखें)। आइए

जो मजबूत और अच्छी तरह से समर्थित महसूस करते हैं, "वे ज्यादा घमण्डी न हों" पर "ध्यान रखें की वे गिर न जाएँ"। नम्रता और प्रभु के प्रति उत्साह, वे शर्तें हैं जिसके द्वारा हम बड़ी आशीषें पाते हैं, और ये वो शर्तें भी हैं जिसके द्वारा अन्त तक हम इन बड़ी आशीषों को बनाये रख सकते हैं -- जब हम पहले पुनरुथान के द्वारा "बदल" जाएँ और उस महिमा में स्थापित हो जाएँ, जिस अनुग्रह की शुरुवात हमारी कमजोरी में हुई थी। `Z'11-438` R4926:5 (Hymn 120) **आमीन**

रात का गीत (12 अक्टूबर)

दानिय्येल 12:10 परन्तु जो बुद्धिमान है वे ही समझेंगे।

प्रियतम प्रियों, हमें अद्भुत चीजों का आनंद लेने की अनुमति है! परमेश्वर की कृपा से हमें उन चीज़ों के अर्थ को देखने का विशेषाधिकार मिला है जो एक बार रहस्यमय थे, न केवल हमारे लिए, बल्कि हमारे माता-पिता के लिए भी। जबकि बेबीलोन में से कुछ अभक्ति में जा रहे हैं, कुछ बेबीलोन से बाहर आकर आध्यात्मिक रूप से मजबूत हो रहे हैं, और आशा से उसमें प्रवेश करते हैं "जो पर्दे के भीतर है”। यदि मसीह हमारे अगुआ (आगे दौड़ने वाले) हैं, तो हम उनके साथ वहां प्रवेश करेंगे। ऐसा करने का मतलब होगा मसीह का भागीदार होना, जैसा की चिन्ह के रूप में दर्शाया

गया है। सच्ची कलीसिया को मसीह के साथ उनके राज्य में जुड़ना है। तब "पृथ्वी के सभी परिवारों" के लिए किए गए वादों की आशीषें आयेंगी। जैसे - जैसे हम "युगों की दिव्य योजना" की स्थिरता को देखते हैं, हमारे ह्रदय परमेश्वर के प्रति धन्यवाद देने से भरते जाते हैं। हम देखते हैं कि नया युग "ऐसे भारी क्लेश, जैसा अब तक न हुआ" (मत्ती 24:21) के साथ शुरू किया जाएगा; और यह देखते हैं कि संकट का यह समय अन्य तरीकों से, उस भविष्यवाणी के बीच स्थित है जो बताता है कि "बहुत लोग पूछ-पाछ और ढूंढ-ढांढ करेंगे, और इस से ज्ञान बढ़ भी जाएगा" (दानिय्येल 12:4); और यह भी देखते हैं कि संकट का समय होगा; "परन्तु जो बुद्धिमान हैं वे ही समझेंगे"। बुद्धिमानों को उनके आदेशों को प्राप्त करने के स्रोत (जरिया) क्या होंगें या उन्हें ये जानकारियां कहाँ से प्राप्त होंगी? वे उस ज्ञान के अनुसार समझेंगे जो ऊपर से (स्वर्ग से) आता है - वे नम्रता के साथ इन दिव्य वचनों को ग्रहण करेंगे और ऐसा करने से आशीष पायेंगें। आमीन `Z'12-278` R5092:6 (Hymn 333)

रात का गीत (13 अक्टूबर)

आमोस 5:14 हे लोगो, बुराई को नहीं, भलाई को ढूंढ़ो, ताकि तुम जीवित रहो...

वर्तमान समय का सबसे बड़ा विशेषाधिकार परमेश्वर के संतों के चुने हुए समूह में शामिल होना है। इस चुने हुए समूह में प्रवेश करने के लिए विश्वास और आज्ञाकारिता जरूरी आवश्यकताएं हैं। उस विश्वास के द्वारा हमें यीशु को परमेश्वर के मेमने, पाप-उठानेवाले के रूप में पहचानना चाहिए। उस विश्वास के द्वारा हमें यीशु को आदर्श और नमूने (उदाहरण) के रूप में पहचानना चाहिए। इनाम उन लोगों के लिए होगा जिनके पास मसीह की आत्मा है, उनका स्वभाव है, और जो वर्तमान जीवन के माध्यम से प्रभु यीशु के पदचिन्हों पर चलेंगे। इन लोगों को अंततः महिमा, आदर, अमरता - राज्य के साथ प्राप्त होगी। वर्तमान समय में दुनिया के लोगों को ऐसा लगेगा कि इन लोगों की परिस्थितियाँ प्रतिकूल (बुरी या हानिकारक) हैं और ये दुनिया, अपने शरीर और शैतान के विरुद्ध युद्ध लड़ते हुए दिखाई देंगे। संसार यह नहीं समझ सकता कि ये लोग अपनी इच्छाओं का परमेश्वर की इच्छा करने के लिये समर्पण करके, और परिणामस्वरूप प्रभु की आत्मा को पाने के कारण वास्तव में किन खुशियों और आशीषों का आनंद उठाते हैं। लेकिन केवल इन्हीं के पास ऐसी शांति और आनंद और आशीषें हैं जो न तो संसार इन्हें दे सकता है और न ही इनसे ले सकता है। अन्य लोग जो शांति और आनंद और आशीषें खोज रहे हैं और उसे खोजने में असफल रहे हैं, परमेश्वर के संत उसका आनंद लेते हैं। Z'13-156` R5243:5 (Hymn 123) आमीन

रात का गीत (14 अक्टूबर)

1 कुरिन्थियों 9:27 मैं अपनी देह को मारता कूटता, और वश में लाता हूं...।

वचन अपने आप में एक बड़ा पाठ है। यह वचन हमारे ध्यान में इस तथ्य को लाता है कि, प्रेरित की तरह, हमें अपने आप को मसीह यीशु में नई सृष्टि के रूप में पहचानना है, जिनके लिए "पुरानी बातें बीत गई हैं; सब बातें नई हो गईं हैं" (2 कुरिन्थियों 5:17) और इस दृष्टिकोण से कार्य करते हुए, नई सृष्टि को पुराने स्वभाव पर, इसकी इच्छाओं और लगाओं पर निरंतर निगरानी रखनी चाहिए और ऊँचे कानून के अनुरूप इन्हें पूरी तरह से नए स्वभाव के वश में रखना चाहिए। यह आशा रखते हुए; यह प्रार्थना करते हुए कि पहले पुनरुत्थान के महिमामय रूप से संपन्न होने पर, नई सृष्टि, नया मन या नई इच्छा आत्मिक देह को पहन लेगी। देह को इस प्रकार से वश में रखने में, बुद्धिमानी से क्या खायें, क्या पियें, क्या पहनें, और हमारी प्रत्येक क्रिया, शब्द और विचार को नियंत्रण में रखना भी शामिल है। `Z'08-361` R4289:1 (Hymn 150) आमीन

रात का गीत (15 अक्टूबर)

1 पतरस 3:15 जो कोई तुम से तुम्हारी आशा के विषय में कुछ पूछे, तो उसे उत्तर देने के लिये सर्वदा तैयार रहो।

आशा के सुसमाचार का प्रचार करने के मार्ग पर चलकर हम अपने स्वामी और प्रेरितों का अनुकरण कर रहे हैं। उनके पास इस आशा, भरोसे, दृढ़ विश्वास, प्रेम, आनंद और शांति की आत्मा इतनी प्रचुर मात्रा में थी कि वे क्लेशों में भी आनंद ले सकें; और उन्होंने ऐसा किया भी; प्रेरितों ने इस बात के लिए भी परमेश्वर की स्तुति के गीत गाये कि वे मसीह के दुखों में सहभागी होने के योग्य गिने गए ताकि उनकी महिमा में भी भागीदार हो सकें। आइए, प्रिय भाइयों, ये महसूस करें कि दुनिया में आँसू और दुःख हैं, और बहुत सा डर है। आइये हम अपने समय, बल, हुनर, आनंद आदि का अधिक से अधिक उपयोग इस संसार को उनके मानसिक तनाव से राहत देने में करें। यीशु की बातों को ध्यान से सुनो: "वह उन की आंखों से सब आंसू पोंछ डालेगा" (प्रकाशितवाक्य 21:4)।" तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है" (मत्ती 5:48)। मसीह और उनकी कलीसिया के द्वारा पृथ्वी के सभी लोगों के आसुओं को पोंछना भविष्य में परमेश्वर का सबसे बड़ा कार्य होगा, इसलिए आइये हम अभी के समय में उनमें से कुछ आंसुओं को पोंछ डालें। इस प्रकार हम दुनिया के लिए परमेश्वर के साथ संगति में आने का मार्ग तैयार करने में मदद करेंगे, और अभी के

विश्वासी भाइयों की यीशु के पदचिन्हों पर अधिक ध्यान से चलने और अच्छे मार्ग में एक-दूसरे का प्रोत्साहन करने में मदद करेंगे। R5214:4 (Hymn 280) आमीन

रात का गीत (16 अक्टूबर)

रोमियो 13:14 प्रभु यीशु मसीह को पहिन लो।

हमारे दिल पहले से ही प्रभु को समर्पित हैं। उनकी पवित्र आत्मा से उत्पन्न होने के द्वारा हमें पहले से ही उनके परिवार में गोद ले लिया गया है। लेकिन हमारी देह परिपूर्ण नहीं है, और यह पुराने स्वभाव के कई वस्त्रों को पहने रखना पसंद करती है, जिन्हें हमें उतार देना चाहिए। हमें धीरे-धीरे पुराने वस्त्रों को नए वस्त्रों यानि स्वर्ग की पोशाक से बदल देना चाहिए, जिनके द्वारा सभी हमे बाहरी रूप से और हमारे पेशे से भी पहचान पाएं कि हम परमेश्वर के बच्चे हैं, मसीह के भाइयों में से हैं, "परमेश्वर के वारिस और हमारे प्रभु मसीह यीशु के संगी वारिस हैं"। प्रभु यीशु मसीह को पहनना एक क्षण का काम नहीं है, न ही एक घंटे का, और न ही एक माह का, और न ही एक वर्ष का काम है; यह जीवन भर का काम है। लेकिन जब तक इसे शुरू नहीं किया जाएगा यह कभी पूरा नहीं होगा। और ये निश्चित है कि हम वास्तव में पूरी तरह से मसीह के

चरित्र को नहीं पहन सकते हैं। फिर भी, प्रभु, हमारे पुराने स्वभाव को उतारने, शरीर के कार्यों को उतारने और धर्म के वस्त्रों को पहनने के लिए किये गए प्रयासों और इसके लिए किये गए हमारे संघर्ष को देखेंगे। ये धर्म के वस्त्र प्रभु के साथ हमारे रिश्ते के लिए उपयुक्त हैं - ये हमारी स्वर्गीय पोशाक हैं, एक ऐसा वस्त्र है, जो हमें हमारे प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर के लिये संसार से अलग करेगा। `Z'09-151` R4402:3 (Hymn 82) आमीन

रात का गीत (17 अक्टूबर)

यूहन्ना 5:39 तुम पवित्र शास्त्र में ढूंढ़ते हो, क्योंकि समझते हो कि उस में अनन्त जीवन तुम्हें मिलता है, और यह वही है, जो मेरी गवाही देता है।

जैसा कि यह वचन बताता है, पवित्रशास्त्र (बाइबल) में प्रभु यीशु के बारे में बताया है, और जो कोई भी उनके बारे में जानना चाहता है, उसे बाइबल में से ढूंढकर पढ़ना चाहिए। दिव्य प्रबंध के अंदर, प्रेरितों, भविष्यवक्ताओं, और शिक्षकों का होना जरुरी है। लेकिन परमेश्वर के वचन की जगह पर मनुष्य के किसी भी शब्द को नहीं लेना चाहिए। बल्कि, उनकी उन्हीं बातों को मानना है जो वचनों के अनुसार हैं और यह जांचने के लिए पवित्र

आत्मा का होना जरूरी है। हृदय को परमेश्वर के साथ तालमेल में लाकर और नम्रता से सिखने के लिए मन को तैयार करके ही शास्त्रों की खोज की जानी चाहिए। इसके बाद पूरा समर्पण करके पवित्र आत्मा को प्राप्त करने के द्वारा हम दिव्य संदेशे को समझने की आशा रख सकते हैं। और इन वचनों में जो अनंत जीवन पाने का वादा है उन्हें पाने के लिए प्रभु का मार्गदर्शन प्राप्त कर सकते हैं। और इस प्रकार से हमें प्रभु सिखाते हैं। Z'09-54` R4334:4 (Hymn 296) आमीन

रात का गीत (18 अक्टूबर)

यूहन्ना 4:24 परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसकी आराधना करने वाले आत्मा और सच्चाई से आराधना करें।

हमें अच्छी तरह से लगातार मन में सोचना है कि परमेश्वर, जिनसे हमारा नाता है, वे असीमित शक्ति रखने वाले आत्मिक जन हैं; वे हमारी सोच और दिल के इरादों को पढ़ सकते हैं; इसलिए हम परमेश्वर के ग्रहणयोग्य जो भी आराधना या सेवा करें, वह ईमानदार हृदय से सच्चाई और आत्मा में की जानी चाहिए। वे अपने लिए केवल ऐसे ही आराधकों को खोजते हैं और ऐसे विभाग के लोग हैं, लेकिन अभी के युग में बहुत कम ऐसे लोग हैं जो सचाई और आत्मा से आराधना करते हैं। सभी विश्वास के घराने

के लोगों को, शाही याजकों, और बड़ी भीड़ को अनुग्रह की वाचा के द्वारा इकठ्ठा करने के बाद, परमेश्वर के अनुग्रह को आगे फ़ैलाने के लिए, नई वाचा में संसार के हजारों लोग धार्मिकता की और मोड़ें जायेंगे। ताकि वे सभी धार्मिकता की आशीषों और परमेश्वर के प्रेम को देखने के योग्य बन जाएँ और इनका अनुभव कर सकें। ऐसा इस इरादे से किया जायेगा कि जिस अनुपात में उनके हृदय परमेश्वर के साथ तालमेल में आयेंगें वे लोग उसी अनुपात में वापसी (RESTITUTION) का अनुभव करेंगें और उनके चरित्र में, दिल में, प्राणों में, दिव्य व्यवस्था फिर से लिखी जाएगी। `Z'09-173` R4410:6 (Hymn 65) आमीन

रात का गीत (19 अक्टूबर)

नीतिवचन 11: 24,25 ऐसे हैं, जो छितरा देते हैं, तौभी उनकी बढ़ती ही होती है; और ऐसे भी हैं जो यथार्थ से कम देते हैं, और इससे उनकी घटती ही होती है। उदार प्राणी हृष्ट पुष्ट हो जाता है, और जो औरों की खेती सींचता है, उसकी भी सींची जाएगी।

यह वचन स्पष्ट रूप से हमें यह पाठ सिखाता है कि, प्रभु अपने लोगों को हृदय और मन की उदारता को बढ़ाते हुए देखने से प्रसन्न होते हैं - जिस

अनुपात में वे परमेश्वर और उनकी उदारता के ज्ञान में बढ़ते हैं, उसी अनुपात में उनको खुद भी उदारता में बढ़ना चाहिए। लेकिन वचनों में कहीं भी यह घोषणा नहीं की गई है, कि यदि प्रभु के लोग अभी पूरी तंगी में हैं, तो ये इस बात का सबूत है कि, उनके पिछले जीवन में किसी समय पर जब उनके पास साधन थे, तब उन्होंने उन साधनों के एक हिस्से का उपयोग प्रभु की सेवा में नहीं किया। लेकिन परमेश्वर की प्रेरणा से ऊपर लिखे गए नीतिवचन इस सबक के बहुत करीब हैं। सभी घटनाओं में यह लाभदायक होगा कि इस गवाही को अपने मन में रखते हुए परमेश्वर का हर बच्चा सावधानी से सतर्क रहे, ताकि प्रतिदिन जो आशीषें परमेश्वर से हमें मिलती हैं उनमें से कुछ साधनों को ध्यान से, प्रार्थनापूर्वक, प्रेम से प्रभु की सेवा में बीज की तरह बोने के लिए अलग रखा जाये, जिसको उपयोग में लाने की सलाह हमें प्रभु अपने सर्वोत्तम ज्ञान के अनुसार देंगे। `Z'16-219` R5927:2 (Hymn 226) आमीन

रात का गीत (20 अक्टूबर)

मत्ती 5:10 धन्य हैं वे, जो धर्म के कारण सताए जाते हैं, क्योंकि स्वर्ग का राज्य उन्हीं का है।

यह वचन हमारे प्रभु के द्वारा स्थापित किये गए प्रचलित सिद्धांत का उपयोग करता है कि “हमें बड़े क्लेश उठाकर परमेश्वर के राज्य में प्रवेश करना होगा “(प्रेरितों 14:22)। ऐसा इसलिये नहीं है कि दिव्य शक्ति हमारी क्लेश से रक्षा नहीं कर सकती; न कि ऐसा इसलिये है कि हमारे प्रभु की हमारे कल्याण में कोई रूचि नहीं है, बल्कि काफी हद तक इसके विपरीत ऐसा इसलिये है कि कलीसिया के ऊपर रखी गयी दिव्य परीक्षाओं के अनुसार, केवल परीक्षाओं और क्लेशों के माध्यम से ही जिन्हें कलीसिया अपने पृथ्वी पर के देह के सदस्यों के माध्यम से, प्रभु के प्रति वफादारी के द्वारा, सहन करेगी; नया स्वभाव उन्नति कर सकता है, शिक्षा-प्राप्त कर सकता है और प्रभु के स्वरुप में बढ़ सकता है। यह परीक्षाएं अलग - अलग तरह से आयेंगी - विश्वास, आज्ञापालन, धीरज, सहनशीलता, प्रेम इत्यादि। और केवल जय पानेवालों के साथ इनाम देने का वादा किया गया है। परन्तु उस अनुग्रह को देने का वादा करने के लिये, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे, परमेश्वर का धन्यवाद करो। अगर हमारे दिल वफादार हैं और हम अपनी पूरी कोशिश करते हैं, तो बाकि परमेश्वर देख लेंगें। `Z'09-39` R4326:1 (Hymn 222) आमीन

रात का गीत (21 अक्टूबर)

भजन संहिता 84:11 क्योंकि यहोवा परमेश्वर सूर्य और ढाल है; यहोवा अनुग्रह करेगा, और महिमा देगा; और जो लोग खरी चाल चलते हैं; उन से वह कोई अच्छी वस्तु रख न छोड़ेगा।

यह वचन दाऊद के विभाग के लोगों, प्रिय लोगों, अभिषेक किये हुए लोगों, मसीह के सदस्यों के लिए एक बहुत बड़ा प्रोत्साहन है। इन लोगों के लिए परमेश्वर सूर्य और ढाल दोनों हैं; वे न केवल उन्हें ज्ञान देते हैं, परन्तु जो आशीषें वे उनको देते हैं, उससे उन्हें कोई भी चोट नहीं पहुँचने देते। परमेश्वर उन्हें सभी शत्रुओं से और सब कुछ से ढाल की तरह बचाएंगे जो किसी भी तरीके से चोट पहुंचाने के लिए आएगा; जो लोग परमेश्वर से प्रेम रखते हैं, उनके लिये सब बातें मिलकर भलाई ही को उत्पन्न करेगी; अर्थात उन्हीं के लिये जो उस की इच्छा के अनुसार बुलाए हुए हैं। तब, ऐसे धन्य आश्वासन के साथ, हम भविष्य की ओर आनंदित होते हुए और दृढ़ विश्वास के साथ देख सकते हैं, और महिमामय इनामों में हिस्सा पाने का भरोसा रख सकते हैं जिसे परमेश्वर ने विश्वासी लोगों को देने का वादा किया है।`Z'08-237` R4219:6 (Hymn 273) आमीन

रात का गीत (22 अक्टूबर)

इफिसियों 2:4,5 परन्तु परमेश्वर ने जो दया का धनी है; अपने उस बड़े प्रेम के कारण, जिस से उस ने हम से प्रेम किया। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे, तो हमें मसीह के साथ जिलाया; (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है।)

कितना निराला है यह परमेश्वर का प्रेम और मसीह का प्रेम? इस प्रेम की लम्बाई, चौड़ाई, ऊंचाई और गहराई को नापना कितना असम्भव सा लगता है। जिन्होंने यीशु मसीह को अपना उद्धारकर्ता स्वीकार कर लिया है और परमेश्वर के साथ जीवित बलिदान की वाचा बाँधी है, अपना छोटा सा सब कुछ समर्पित करके और उनकी सभी मर्जी, आशीषें और सुविधाओं को स्वीकार किया है। यदि ये लोग कभी भी अपनी वाचा से कुछ कारणों से गिर जाएँ, अपनी कमजोरियों के कारण, किसी विरोध के कारण गिर जाएँ या कोई अन्य कारण से गिर जाएँ, तो उन्हें अपने मन में इस महान प्रेम को स्मरण करना चाहिए। जब हम अपराधों के कारण मरे हुए थे तो हमें मसीह के साथ जिलाया। (अनुग्रह ही से तुम्हारा उद्धार हुआ है) जो प्रेम पिता ने और मसीह ने हमसे बांटा है, ऐसा प्रेम जिसने न केवल हमारे पापों से छुटकारा दिलाया है, बल्कि हमारे बपतिस्मा के दिन से हमें एक अद्भुत स्वर्गीय बुलावे में शामिल किया है, हमारे लिए अद्भुत आशीषें

और सुविधाएं दी हैं। और यदि हम मसीह के साथ दुःख उठाएँ तो उनके साथ संगी वारिस भी होंगें। `Z'05-139` R3553:5 (Hymn 296) आमीन

रात का गीत (23 अक्टूबर)

यहूदा 20 पर हे प्रियों तुम अपने अति पवित्र विश्वास में अपनी उन्नति करते हुए और पवित्र आत्मा में प्रार्थना करते हुए।

कुछ लोगों के लिए किसी भी समय प्रार्थना करना बेतुका और जटिल हो सकता है। परन्तु एक सच्चे मसीह के लिए प्रार्थना करना परमेश्वर की सबसे बड़ी आशीष है। यह एक विशेष अधिकार है जिसके द्वारा हम कभी भी अनुग्रह के सिंहासन के पास जा सकते हैं और आवश्यकता के अनुसार हर समय उनका अनुग्रह मांग सकते है। यह एक बहुमूल्य अवसर है जिसकी कीमत आंकी भी नही जा सकती है। यह धन्य मौका, प्रार्थना करने का केवल परमेश्वर के परिवार के लोगों के लिए ही है, क्योंकि वह उनके अपने लोग हैं और इसलिए हर समय प्रभु यीशु जो हमारे वकील और उद्धारकर्ता हैं उनके द्वारा हम परमेश्वर के पास जा सकते है। आमीन । `Z'09-188` R4419:2 (Hymn 241)

रात का गीत (24 अक्टूबर)

यहून्ना 12:46 मैं जगत में ज्योति होकर आया हूं ताकि जो कोई मुझ पर विश्वास करे, वह अन्धकार में न रहे।

पवित्र आत्मा कलीसिया के लिए ज्योति है, जिसके द्वारा हमें सच्चाई की ओर, ख़ास कर ले जाया जाता है। प्रेरित पतरस हमें बताते हैं कि हमारे पास भविष्यद्वक्ताओं का दृढ वचन है, हम उसे अंधियारे में दिये के समान समझकर, उसपर ध्यान करके अच्छा करते हैं। (2 पतरस 1:19) धर्मियों के मार्ग की ज्योति, का प्रकाश "दोपहर तक अधिक अधिक बढ़ता रहता है"। (नीतिवचन 4:18) हम अभी भी अन्धेरे स्थान में हैं और तब तक रहेंगे जब तक अन्धेरा चला ना जाए और दिन आ जाए। इसलिए पतरस कहते हैं कि, हमें भविष्यद्वक्ताओं के वचनों की तब तक आवश्यकता है, जब तक कि "पौ न फटे"। इस प्रकार से हम देखते हैं कि एक वचन दूसरे वचन पर प्रकाश डालता है। यानी एक वचन दूसरे वचन को समझने में हमारी मदद करता है। आमीन।`Z'13-324`R5339:1 (Hymn 260)

रात का गीत (25 अक्टूबर)

भजन संहिता 130:3,4 हे याह, यदि तू अधर्म के कामों का लेखा ले, तो हे प्रभु कौन खड़ा रह सकेगा? परन्तु तू क्षमा करने वाला है? जिस से तेरा भय माना जाए।

ऐसे आश्वासन कितने अनमोल होते हैं, जब हमारे प्राण अपनी कमजोरियों के दर्द भरे अहसास के प्रति जागरुक हो जाते हैं, और धार्मिकता के परिपूर्ण सिद्धांतों पर खरा उतरने में पूरी तरह से लाचार हो जाते हैं! यह जानना कितना आशीषित है कि जब हमारे हृदय वफादार और सच्चे होते हैं, तब हमारे परमेश्वर हमारी शारीरिक कमियों को हमारे विरुद्ध नहीं गिनते हैं। यदि हम अपने उद्धारकर्ता प्रभु यीशु के मूल्य के द्वारा, प्रतिदिन सफाई के लिए परमेश्वर के पास जायें, तो वे हमारी असफलताओं को हम पर नहीं डालेंगे, बल्कि मुफ्त में हमें क्षमा कर देंगे और धोकर साफ़ कर देंगे। हमारे रक्षक प्रभु यीशु मसीह की परिपूर्ण धार्मिकता, हमारा महिमामय वस्त्र है, जिसे पहनकर हम नम्रता के साथ हियाव बाँधकर परमेश्वर के पास जा सकते हैं - निसन्देह महान यहोवा की उपस्थिति में जा सकते हैं, जो राजाओं के राजा और प्रभुओं के प्रभु हैं। आमीन `Z'15-344` R5802:5 (Hymn 213)

रात का गीत (26 अक्टूबर)

यशायाह 30:29 तब तुम पवित्र पर्व की रात का सा गीत गाओगे…।

यह एक हकीकत है कि, जिन्होंने यह चख लिया है कि, प्रभु अनुग्रहकारी हैं, जिन्होंने उस आनन्द को पाया है जिसे कोई मनुष्य उनसे ले न सके, जिन्होंने मसीह में परमेश्वर के अनुग्रह को चखा है, वे न केवल अपने होठों से स्तुति और प्रशंशा के गीत गायेंगे, बल्कि वे अपने पूरे जीवन को परमेश्वर की स्तुति के गीत गाने और उनका धन्यवाद करने में बिताकर भी अति आनन्दित और मग्न होंगे। जिनके ह्रदय साफ़ हैं, जो धर्मी ठहराए गए हैं और समर्पित हैं, वे परमेश्वर की भलाई की प्रशंशा पूरी तरह से करेंगे और जहाँ कहीं भी उन्हें सुनने वाले कान मिलेंगे, वे हर अवसर पर परमेश्वर की स्तुति और प्रशंशा के गीत गुनगुनाएंगे। आमीन `Z'97-306` R2232:5 (Hymn 179)

रात का गीत (27 अक्टूबर)

विलापगीत 3:25,26 जो यहोवा की बाट जोहते और उसके पास जाते हैं, उनके लिये यहोवा भला है। यहोवा से उद्धार पाने की आशा रख कर चुपचाप रहना भला है।

आइये हम कोई गलती न करें। यहाँ पर सवाल ये है कि जो लोग पवित्र किये गए हैं, और परमेश्वर के लिए अलग किये गए हैं, उन्हें कोई विरासत मिलेगी या नहीं मिलेगी। जो थोड़े से थोड़े में सच्चा है, वह प्रभु की प्रशंशा करता है और उनके प्रबन्ध के अनुसार मिली सभी सांसारिक और आत्मिक आशीषों की सरहाना करता है। ऐसे लोग हमेशा बने रहने वाले जोश के साथ आगे की ओर देखते हैं और अपनी विश्वसनीयता के अनुसार चरवाहे की देखभाल पाते हैं। दूसरी ओर, वे लोग जो "समय पर मिले आहार" की और इस कटनी के समय के विशेष प्रावधानों की प्रशंशा नहीं करते -- वे तैयार नहीं होंगें; और सम्भव है कि जो लोग इन्हें धोखा देने का भरसक प्रयत्न करेंगे, उनके धोखे में आकर खुद को उनके लिए अलग कर लेंगें। आमीन `Z'09-254` R4459:6 (Hymn 257)

रात का गीत (28 अक्टूबर)

भजन संहिता 141:2 मेरी प्रार्थना तेरे सामने सुगन्ध धूप, और मेरा हाथ फैलाना, संध्या काल का अन्नबलि ठहरे!

आइये हम प्रतिदिन के खत्म होते ही हमारे दिनभर का लेखा अपने प्रभु के अनुग्रह के सिंहासन पर जाकर चुक्ता करें -- और, जितना हो सके हम

उस दिन मिले सभी अवसरों को गिने और यह देखें कि हमने कितने अवसरों का उपयोग किया और किन अवसरों पर ध्यान नहीं दिया; हम दिनभर में कितनी बार जीते और हारे; हमने पूरे दिन में कितनी बार स्वंय का जीवित बलिदान किया और कितनी बार स्वार्थी बने रहे -- और, जरुरत के समय मिले अनुग्रह ने हमारी जो मदद की, उसके लिए परमेश्वर का धन्यवाद करते रहें और सभी गलतियों और हार के लिए खेद प्रकट करते हुए क्षमा माँगते रहें; अपने रक्षक प्रभु यीशु मसीह के बलिदान के मूल्य में और उनके नाम से क्षमा पाते रहने की भूख रखें और अगले दिन प्रभु के अनुग्रह से ज्यादा बड़े उत्साह और अधिक विश्वसनीयता का वादा करें। आमीन `Z'98-4` R2240:4 (Hymn 161)

रात का गीत (29 अक्टूबर)

लूका 19:8 ज़क्कई ने खड़े होकर प्रभु से कहा; हे प्रभु, देख मैं अपनी आधी सम्पत्ति कंगालों को देता हूं, और यदि किसी का कुछ भी अन्याय करके ले लिया है तो उसे चौगुना फेर देता हूं।

हमारा मानना है कि बहुत से लोग आज यह गलती करते हैं कि वे पूरी तरह से जक्कई के द्वारा पालन किये गए मार्ग पर नहीं चलते हैं - वे

उन चीज़ों को पकड़े रहते हैं, जो सचमुच में, हक़ के अनुसार, किसी दूसरे की होती है; और दूसरी गलती ये करते हैं कि - वे अपनी धन- सम्पत्ति या जायदाद या समय या प्रतिभा का अधिक भाग प्रभु को समर्पित नहीं करते हैं। जक्कई एक यहूदी था, और व्यवस्था की आवश्यकताओं के अनुसार उसकी वार्षिक बढ़ोतरी का दसवां हिस्सा धार्मिक मामलों में देना उसकी जिम्मेदारी थी। लेकिन जक्कई इससे कहीं अधिक आगे गया, उसने न केवल अपनी वार्षिक आय का आधा हिस्सा दिया, बल्कि पूरी संपत्ति, पूरा धन, पूरी जायदाद और सामान, जो उसके पास था, सबका आधा हिस्सा दिया। कुछ लोगों ने हमसे पुछताछ की है, एक मसीही का उचित दायित्व (obligation) क्या है? हम जवाब देते हैं कि हमारी उचित सेवा निश्चित रूप से यहूदियों के दशमांश से अधिक होनी चाहिए। हमारी समझ के अनुसार यहाँ तक कि जक्कई भी सम्पूर्ण बलिदान की पूरी हद तक नहीं गया। आमीन `Z'06-280` R3849:4 (Hymn 8)

रात का गीत (30 अक्टूबर)

प्रेरितों 8:4 जो तित्तर बित्तर हुए थे, वे सुसमाचार सुनाते हुए फिरे।

प्रिय भाइयों, वे जो आरम्भ की कलीसिया के साथ थे और उनका मार्गदर्शन करते थे, वे बराबर शक्ति के साथ हमारे साथ भी हैं। जिन्होंने उस समय

की कटनी में मार्गदर्शन किया था वे अभी भी कर रहे हैं, और अपने कार्य के समाप्त होने तक मार्गदर्शन करते रहेंगे। हमारे जीवन के अनुभवों में भी हमें यहूदा इस्करियोती, सिकन्दर ठठेरा, और यन्नेस और यम्बएस के जैसे पात्रों का सामना करना पड़ सकता है। परन्तु प्रभु इन सभी अनुभवों को हमारे लिए भलाई में बदलने की सामर्थ रखते हैं और इन सभी अनुभवों के द्वारा प्रभु अपने अनुग्रह से भरे वादों को हमारे जीवन में पूरा करते हैं। परमेश्वर हमें सताएं जाने, कैद होने, या उसी से सम्बन्धित अन्य अनुभवों की अनुमति दे सकते हैं, लेकिन आइये हम अपने प्रभु की उपस्थिति और सामर्थ पर कभी भी सन्देह न करें। इन सबका परिणाम महिमामय होगा जो कि इन सभी परिक्षाओं और कठिनाईयों से होनेवाली हानि से कहीं ज्यादा पूर्ति कर देगा। "चाहे जो भी हो जाये, विश्वास के द्वारा परमेश्वर पर अटल भरोसा रखा जा सकता है"। आमीन `Z'09-58` R4337:5 (Hymn 200)

रात का गीत (31 अक्टूबर)

मलाकी 3:7 तुम मेरी ओर फिरो, तब मैं भी तुम्हारी ओर फिरूंगा, सेनाओं के यहोवा का यही वचन है।

वचनों में सभी जगह हम ये विचार पाते हैं कि परमेश्वर की करुणा सदा की है -- सम्पूर्ण है। पूरी मानवजाति से थोड़े से लोगों ने अभी के समय में परमेश्वर के अनुग्रह को धर्मी ठहरने के द्वारा चखा है। इन्हें अभी के दिव्य अनुग्रह और करुणा में सहभागी बनाया गया है। जिस प्रकार से प्रभु अभी के समय में इन लोगों से बर्ताव में अनुग्रहकारी हैं, उसी तरह जो पाप के मार्गों से फिर जायेंगे, उनके साथ भी प्रभु ऐसा ही बर्ताव करेंगे। प्रभु उनके साथ भी धीरज रखते हैं जिनमें प्रेम और क्षमा की आत्मा की कमी हैं और खुद चलकर इनके पास आते हैं ताकि उन्हें अपनी अनुग्रह से भरी योजना और प्रबन्ध में शामिल कर सकें। अभी के समय में प्रभु ने विश्वास करने वालों पर जिस प्रकार से अपनी सदा की करुणा को उंडेला है, वह प्रभु की आत्मा को दिखाता है। यह हमारे लिए एक पक्का आश्वासन बन जाता है कि प्रभु अवश्य उचित समय में पृथ्वी के सभी परिवारों को आशीष देंगे और वे प्रभु की करुणा और भलाई के ज्ञान से भर जाएंगे। और वे लोग जो सही हैं उसे जानेंगे और जो - जो इस ज्ञान को और प्रभु को ग्रहण करेंगे, उन्हें अनन्त जीवन पाने का अवसर मिलेगा। आमीन `Z'06-254` R3836:4 (Hymn 226)